

पंडा मेरे घर आ गया

पंडा मेरे घर आ गया

शब्दांकन : ल्यू छ्येन
चित्रांकन : च्याङ छङ्ग्रान

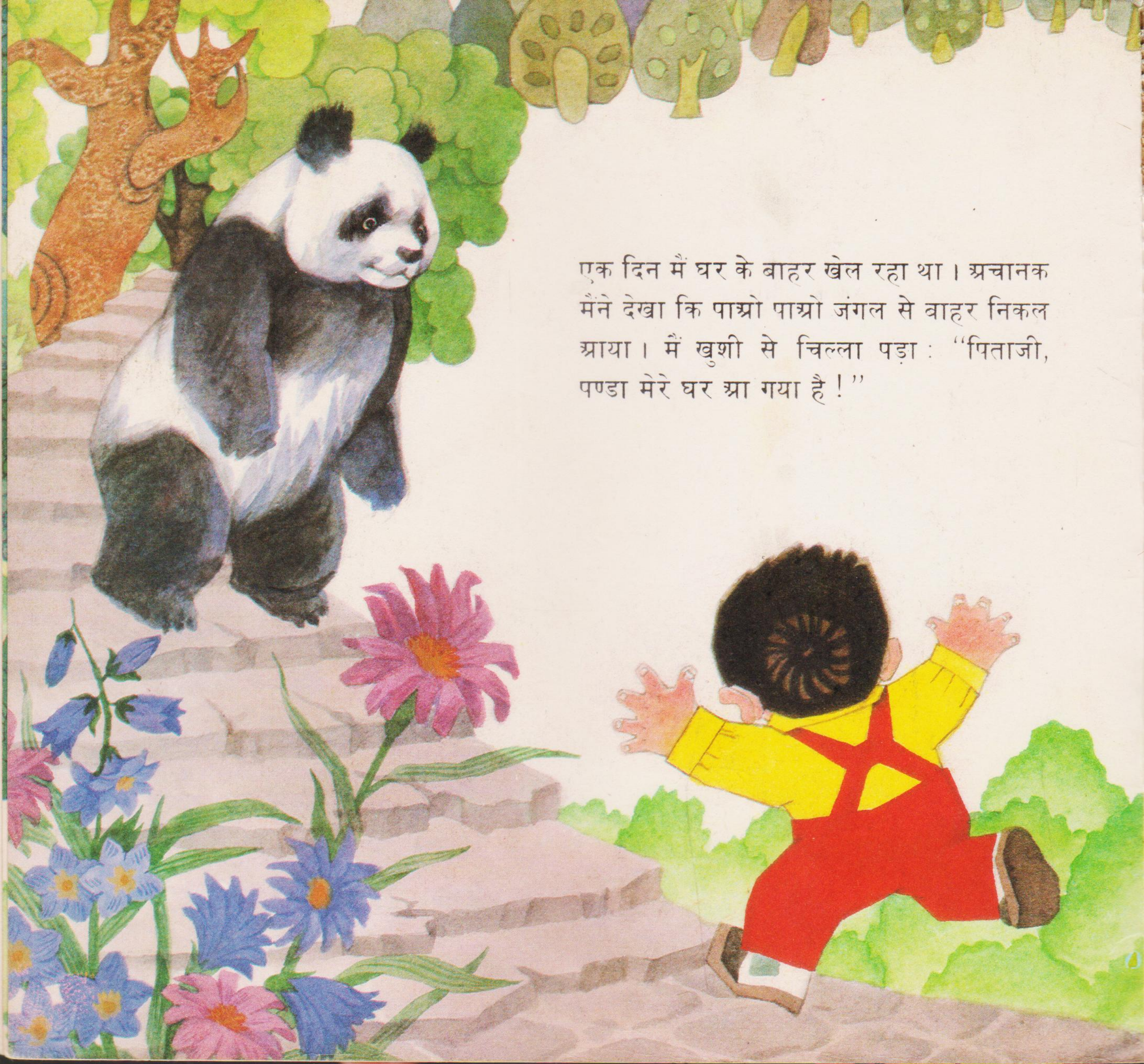


डॉलफिन प्रकाशन पेइचिङ



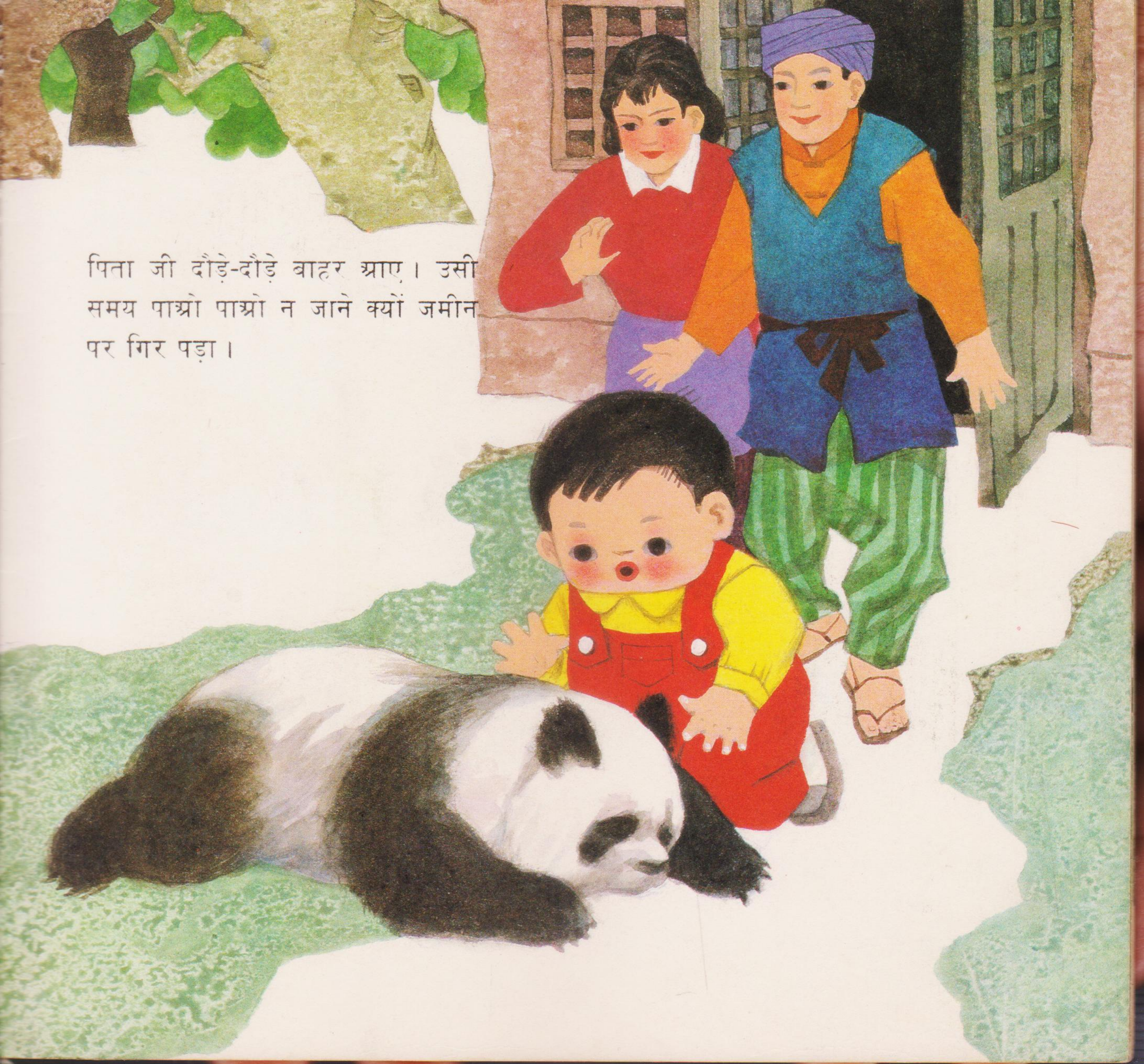
चीन में सछ्वान प्रान्त के पश्चिमी इलाके के जंगल में दुनिया का मूल्यवान और दुर्लभ जानवर पण्डा वास करता है। देखो, शिशु पण्डा पाओ पाओ अपनी मां की गोद में कैसे खेल रहा है।





एक दिन मैं घर के बाहर खेल रहा था। अचानक मैंने देखा कि पाओ पाओ जंगल से बाहर निकल आया। मैं खुशी से चिल्ला पड़ा : "पिताजी, पण्डा मेरे घर आ गया है!"

पिता जी दौड़े-दौड़े बाहर आए। उसी समय पाओ पाओ न जाने क्यों जमीन पर गिर पड़ा।



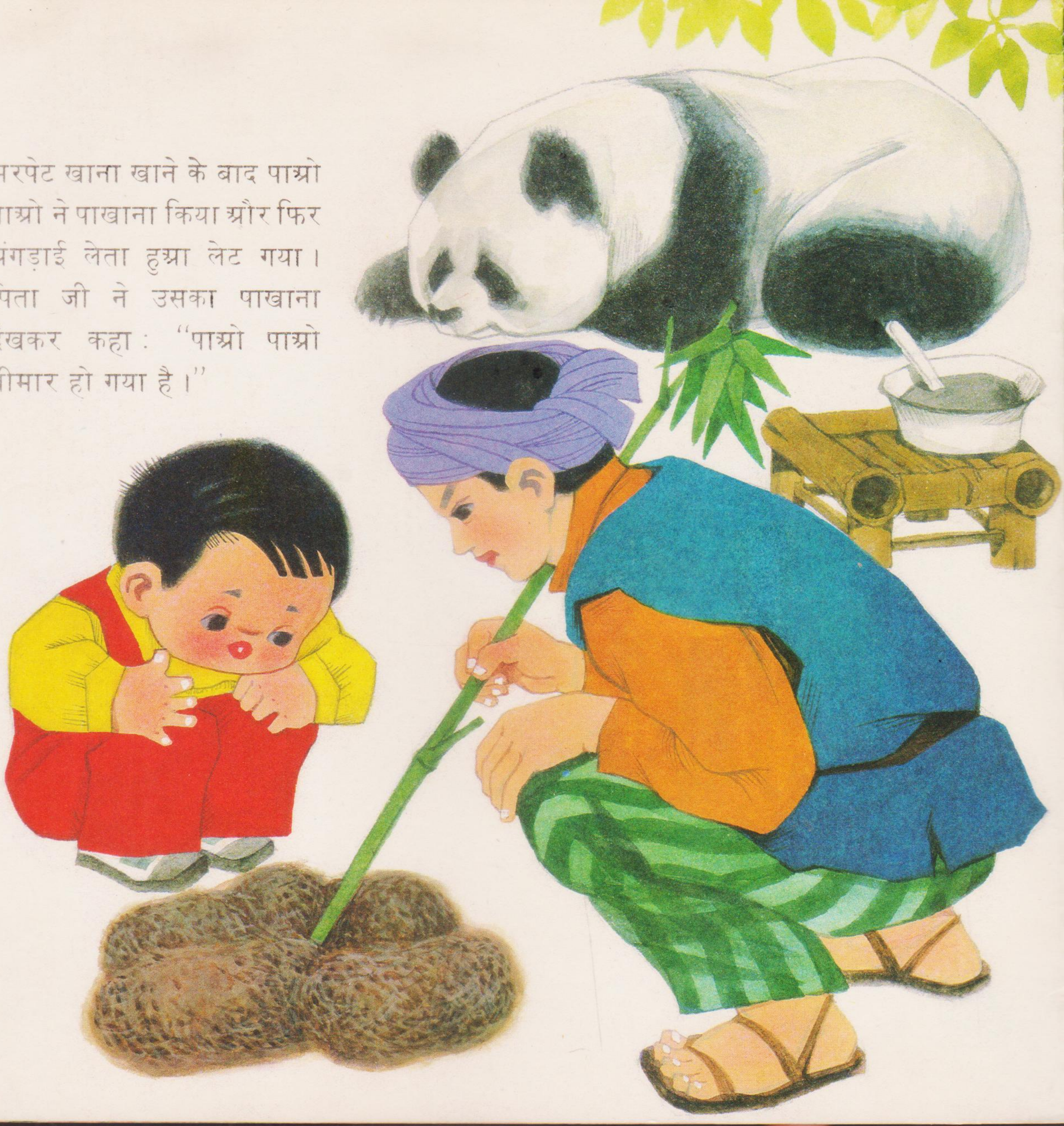


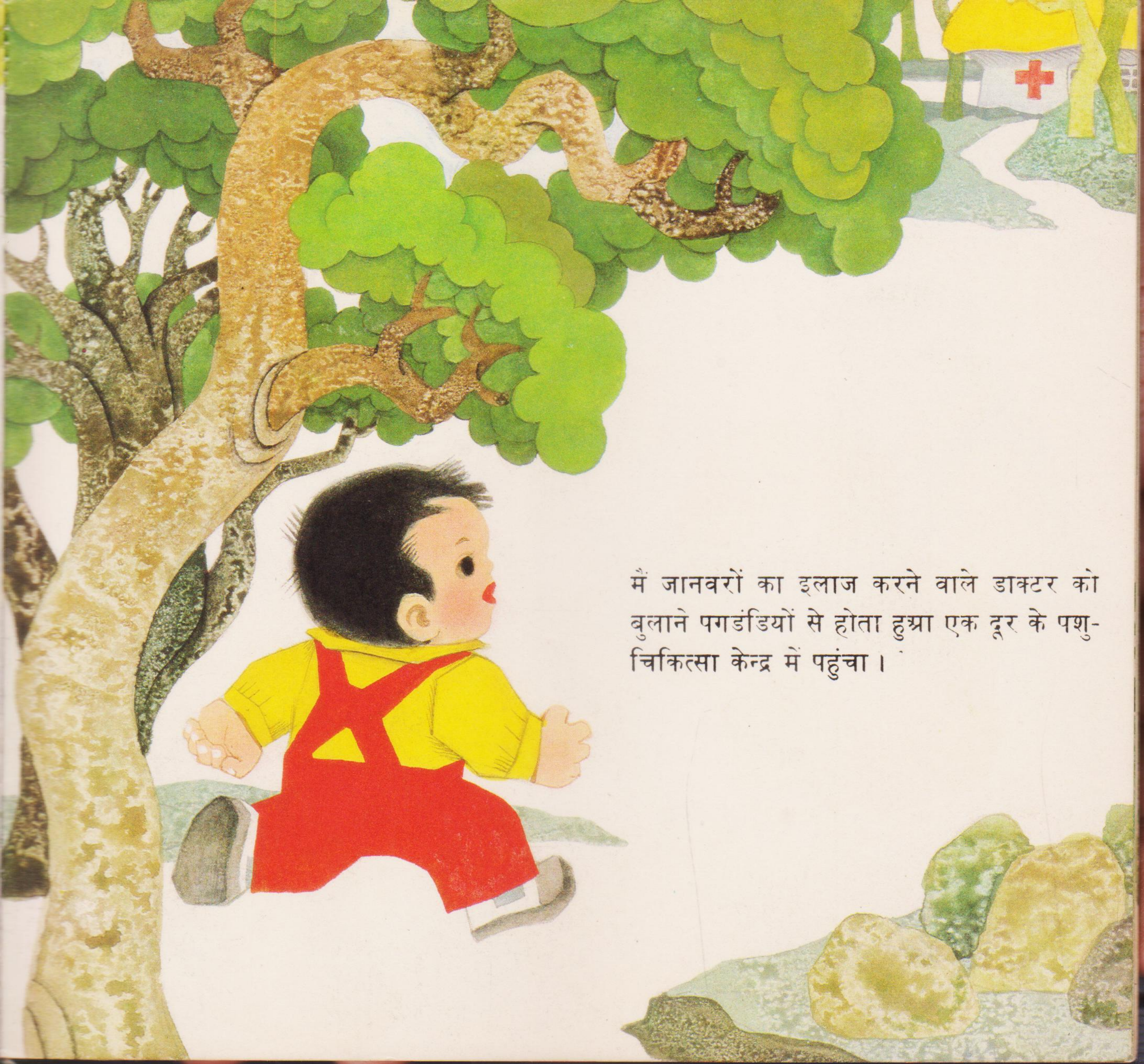
पिता जी पण्डे के बदन पर हाथ फेरते हुए हमदर्दी से बोले : "यह भूख के कारण बेहोश हो गया है। इस साल जंगल में बांस सूखे की वजह से मर गए हैं। इसलिए पण्डों को खाने के लिए कुछ नहीं मिल पाता।" तभी मेरी मां कटोरे में लप्सी ले आईं।



कुछ समय बाद पाग्रो पाग्रो होश में ग्रा गया। मैंने उसे खाने को लप्सी दी। उसने जरा-सी चखी ग्रौर मुंह फेर लिया। तब मैंने लप्सी में चीनी मिला दी ग्रौर वह सारी लप्सी मजे से खा गया।

भरपेट खाना खाने के बाद पाओ पाओ ने पाखाना किया और फिर अंगड़ाई लेता हुआ लेट गया। पिता जी ने उसका पाखाना देखकर कहा : "पाओ पाओ बीमार हो गया है।"





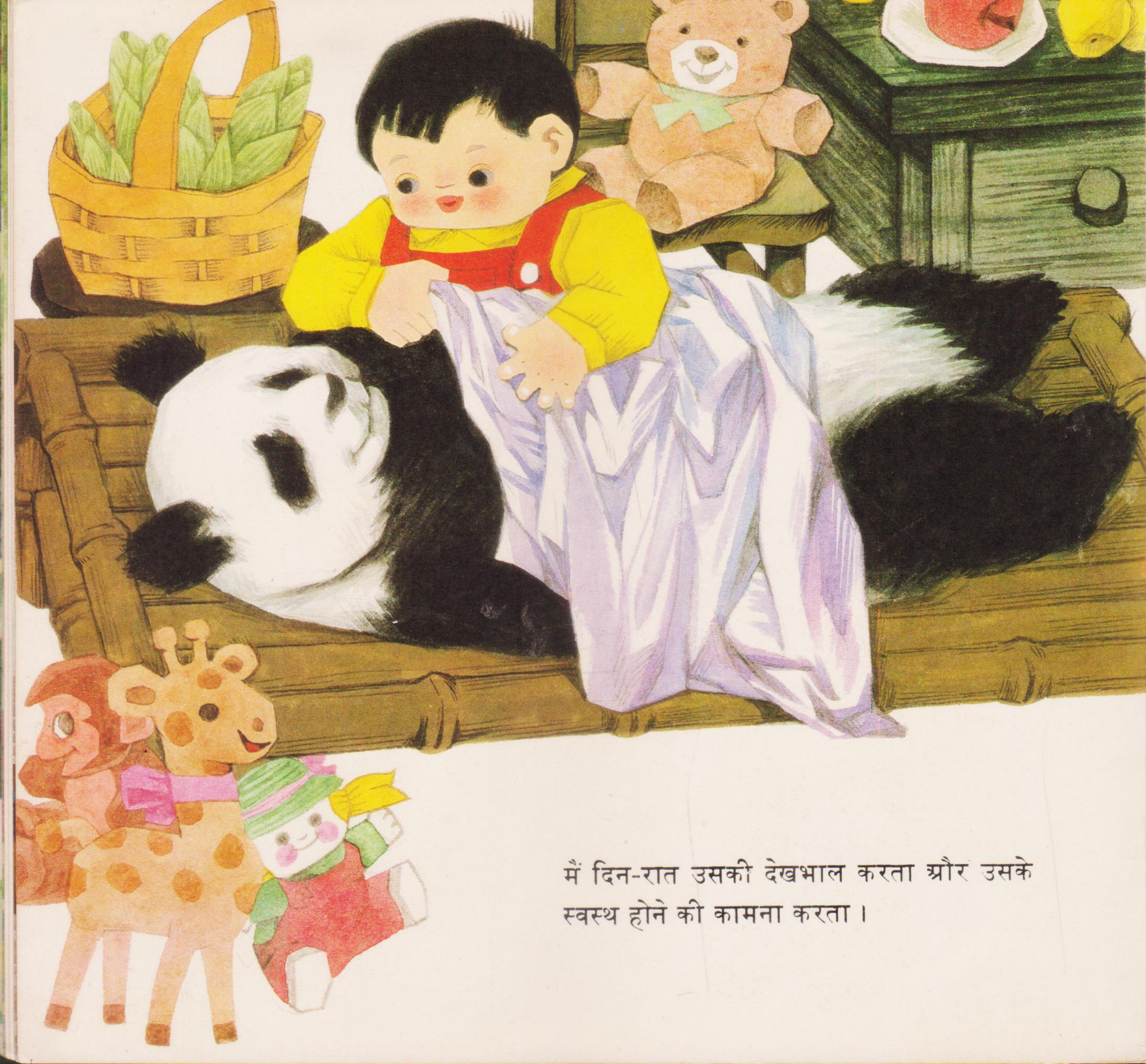
मैं जानवरों का इलाज करने वाले डाक्टर को बुलाने पगडंडियों से होता हुआ एक दूर के पशु-चिकित्सा केन्द्र में पहुंचा ।

डाक्टर दादा ने पाभ्रो पाभ्रो की बारीकी से जांच करने के बाद कहा : "इसका पेट खराब हो गया है। कुछ दिन तक दवा खाने के बाद ठीक हो जाएगा।"



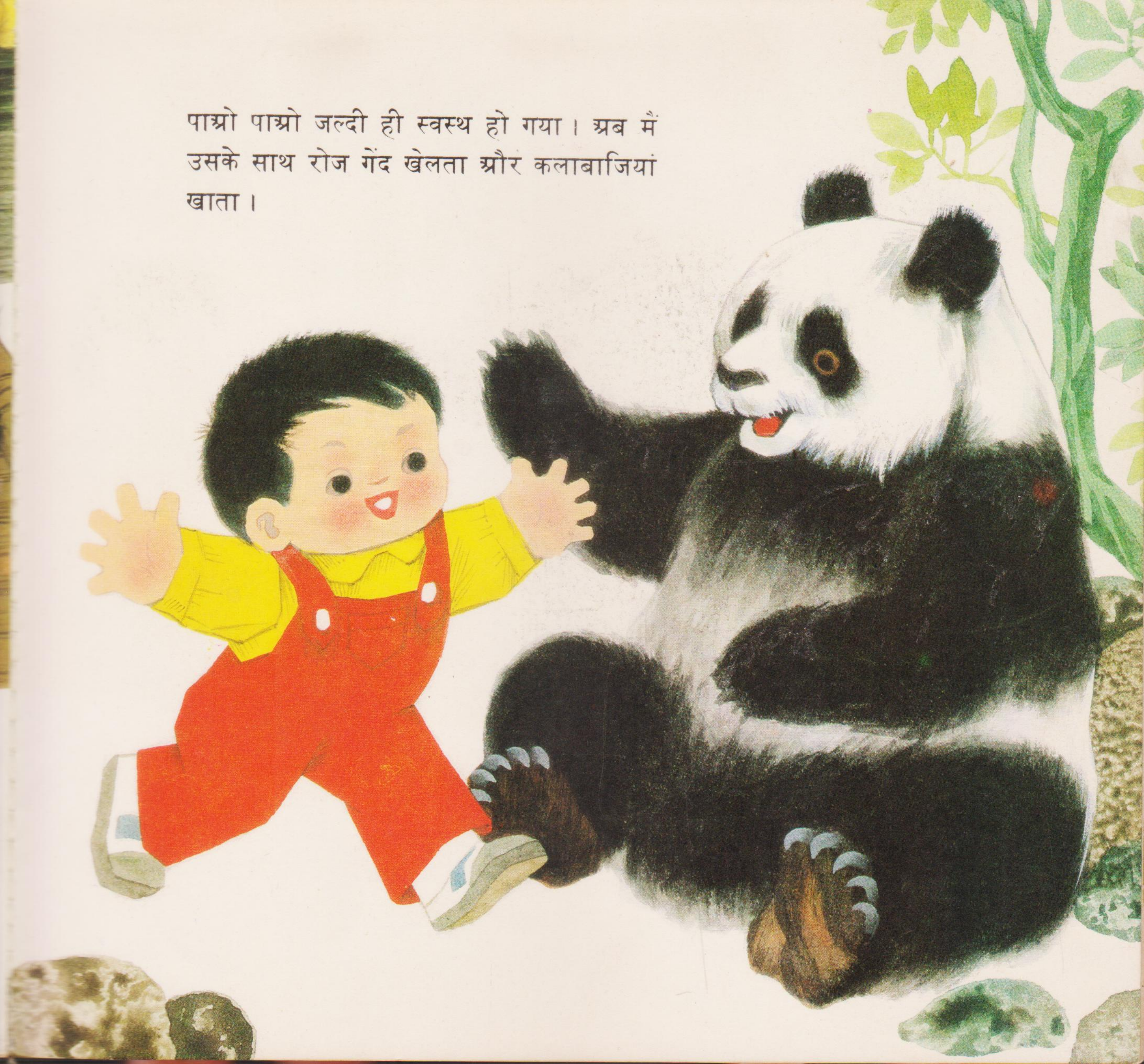


जाने से पहले डाक्टर दादा ने मुझे समझाते हुए कहा : "पण्डा जानवरों में रत्न के समान है, और सिर्फ हमारे देश में ही पाया जाता है। इसलिए तुम इसकी अच्छी तरह देखभाल करना।"



मैं दिन-रात उसकी देखभाल करता और उसके
स्वस्थ होने की कामना करता ।

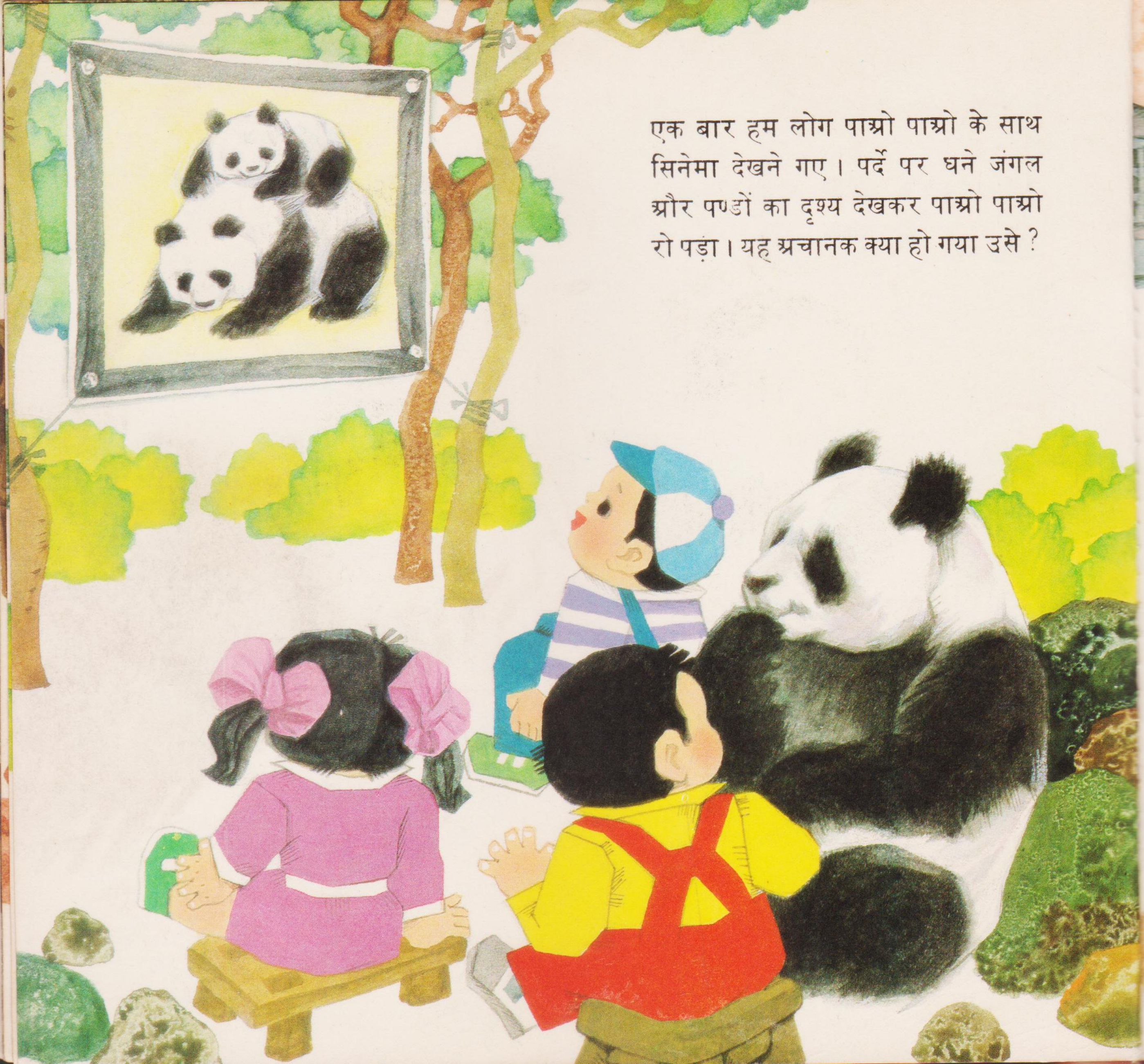
पाम्रो पाम्रो जल्दी ही स्वस्थ हो गया। म्रब मैं उसके साथ रोज गेंद खेलता म्रौर कलाबाजियां खाता।



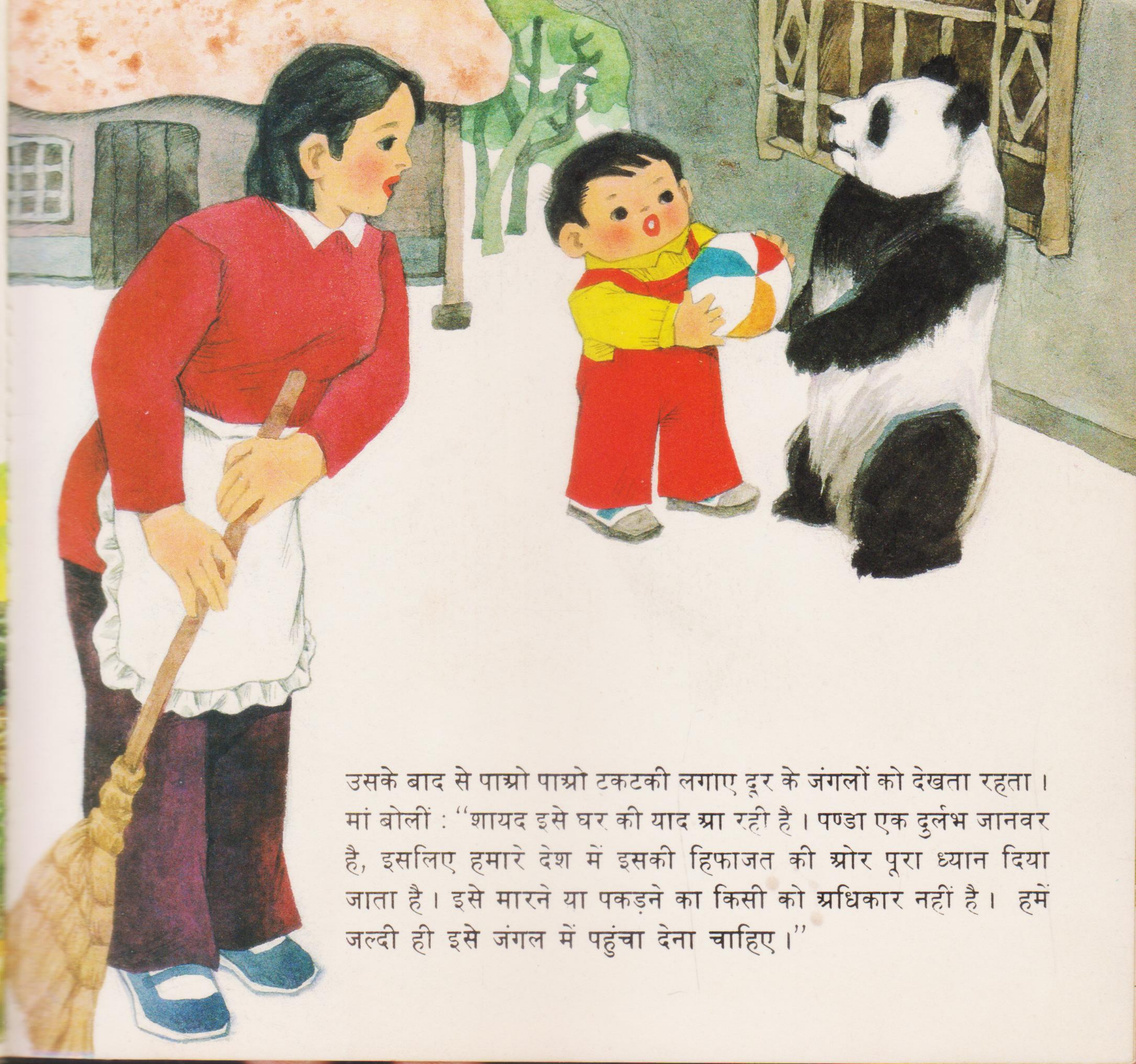


जल्दी ही गांव के सब बच्चे उसके दोस्त बन गए। हम एकसाथ आंखमिचौली खेलते।





एक बार हम लोग पाओ पाओ के साथ सिनेमा देखने गए। पर्दे पर घने जंगल और पण्डों का दृश्य देखकर पाओ पाओ रो पड़ा। यह अचानक क्या हो गया उसे?

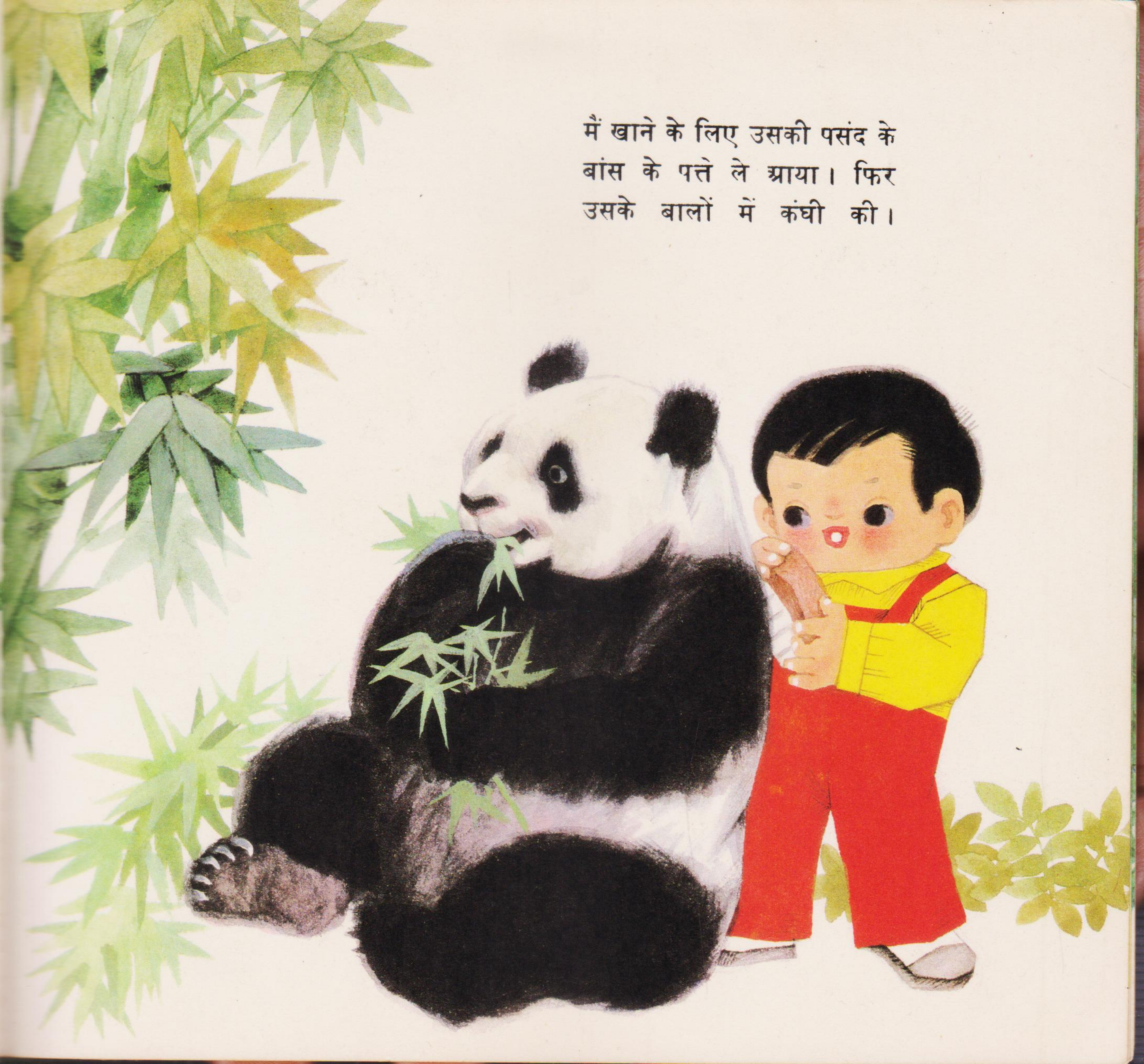


उसके बाद से पाओ पाओ टकटकी लगाए दूर के जंगलों को देखता रहता। मां बोलीं : "शायद इसे घर की याद आ रही है। पण्डा एक दुर्लभ जानवर है, इसलिए हमारे देश में इसकी हिफाजत की ओर पूरा ध्यान दिया जाता है। इसे मारने या पकड़ने का किसी को अधिकार नहीं है। हमें जल्दी ही इसे जंगल में पहुंचा देना चाहिए।"



पाम्रो पाम्रो को छोड़ने को मेरा मन नहीं कर
रहा था, इसलिए मैं उससे लिपटकर रोने लगा।

मैं खाने के लिए उसकी पसंद के बांस के पत्ते ले आया। फिर उसके बालों में कंघी की।

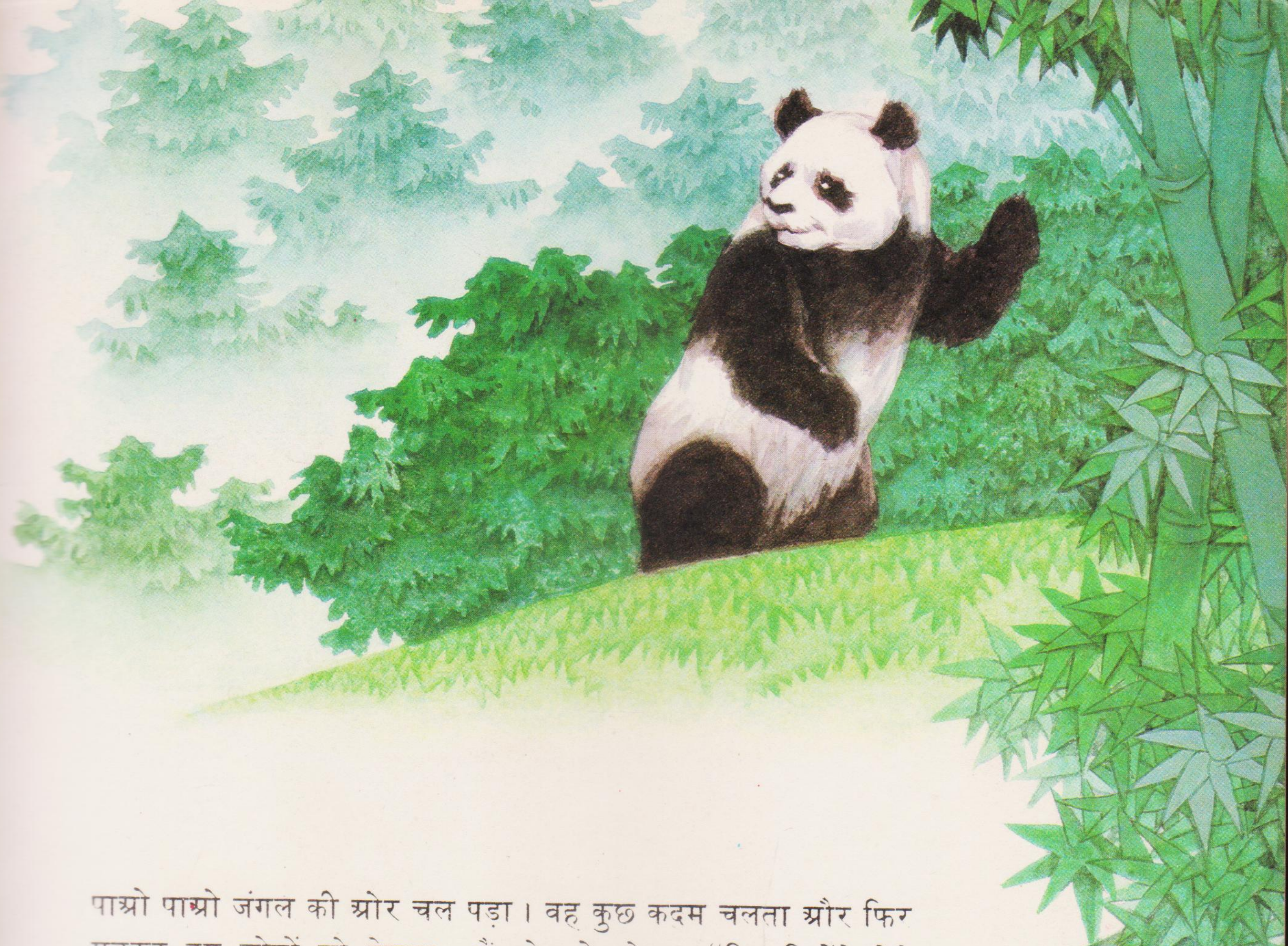




गांव में सभी लोग उसे विदा करने आए। पाओ
पाओ पिता जी द्वारा बनाई गई बांस की टोकरी
में बैठकर न जाने क्या सोचने लगा।







पाश्रो पाश्रो जंगल की श्रोर चल पड़ा। वह कुछ कदम चलता श्रौर फिर मुड़कर हम लोगों को देखता। मैं जोर से बोला : "फिर मिलेंगे, मेरे श्रच्छे दोस्त!" मैं श्रौर मेरे माता-पिता उस समय तक वहां खड़े रहे जब तक कि पाश्रो पाश्रो हमारी श्रांखों से श्रोझल नहीं हो गया। फिर हम लोग घर लौट श्राए।





प्रथम संस्करण 1988

प्रकाशक : **डॉलफिन प्रकाशन**
24 पाएवानच्वाङ मार्ग, पेइचिङ
वितरक : **चीन अंतरराष्ट्रीय पुस्तक व्यापार निगम**
पो. आ. बाक्स 399, पेइचिङ

चीन लोक गणराज्य में मुद्रित

大熊猫来我家
刘 谦 文
姜成安 画
•
海豚出版社出版
(中国北京百万庄路24号)
二二〇七厂印刷
中国国际图书贸易总公司
(中国国际书店)发行
北京399信箱
1988年(24开)第一版
(印地)
ISBN 7-80051-460-9/J·611(外)
00175
88—H—198P